हूड् 1. *A. i. q.* 1. हुड्.

1\. हृ 1. *P. A.* 1) prehendere, capere, tollere, demere, auferre, rapere, abripere. Br. 2. 17.: प्रमथ्यै ’नां (दुहितरम्) हरेयुस् ते हविर् ध्वाङ्क्षा इवा ’ध्वरात्; Bh. 2. 60.: इन्द्रियाणि हरन्ति प्रसभम् मनः; R. Schl. I. 1. 51.: जहार भार्यां रामस्य; Dr. 5. 28.: ह्रियमाणान् तां राजपुत्रीम्; Man. 7.: यस्य राष्ट्राद् ह्रियन्ते दस्युभिः प्रजाः; Mah. 3. 10184.: तत आदाय परशुं रामो मातुः शिरो ऽहरत्; Man. 9. 131.: दौहित्र एवच हरेद् अपुत्रस्या ’खिलन् धनम् (schol. गृह्णीयात्); 135.: धनन् तद् पुत्रिकाभर्ता हरेत; 136.: धनं हरेत्. 2) afferre, apportare, petere, *holen.* Sa. 5. 103.: श्वः फलानि हरिष्यसि. *In dial. Vêd. invenitur* praet. redupl. जभार, जभ्रे pro जहार, जह्रे. — *Desid.* जिहीर्षामि rapere, abripere cupio. Mah. 1. 7480. R. Schl. II. 20. 48. (Cambro-brit. *hwra* capere; v. Pictet p. 67.; gr. χείρ a capiendo dictum, sicut scr. हरण, v. Wils.; fortasse *αἴρω, αἱρέω* e *χαίρω, χαιρέω,* nisi pertinent ad वृ; fortasse *ἀγείρω* = आहरामि cum γ = ह, sicut in γένυς = हनु; fortasse lat. *gero,* ita ut *ges-tum* ortum sit e *ger-tum.*)

c. अनु imitari. Gita-Gov. 8. 4. *V.* अनुहार.

c. अप abripere, auferre, abducere, tollere, demere. N. 10. 7.: निद्रया ’पहृता; Dr. 5. 14.: इन्द्रो ऽपि तां ना ’पहरेत्; 8. 24.: क्षुरेण ’पाहरच् छिरः.

c. अप praef. वि *id.* Mah. 2. 1584.

c. अभि tollere, demere. Mah. 3. 14610.: सा (शक्तिः) मुक्ता ’भ्यहरत् तस्य महिषस्य शिरो महत्. — *Caus.* pugnare. Dr. 8. 5.: कोटिकाश्यो ऽभ्यहारयत्। महता रथवंशेन परिवार्य वृकोदरम्. — *V.* praef. प्र.

c. अव deponere. Mah. 4. 1304.: धनूंष्य् अवहर. — *Caus.* facere ut quis det. *Pass.* Mah. 2. 249.: कच्चिद् अभ्यागता दूराद् वणिजः ... अवहार्यन्ते शुल्कम्; Man. 8. 198.: अवहार्यो भवेत् ... षट् शतन् दमम्.

c. अव praef. अभि *Caus.* अभ्यवहारयामि pugnare jubeo. Mah. 3. 16369. *Vid.* praef. अभि.

c. अव praef. वि 1) agere, facere. Hit. 62. 9.: एतत् सर्वज् ज्ञात्वा यथावसरं व्यवहर्तव्यम्. 2) pugnare. Mah. 4. 1870.: तौ व्यवाहरतां युद्धे. 3) adipisci. Mah. 3. 1462.: शान्तिं व्यवहरन्ति.

c. आ 1) afferre, apportare, adducere. N. 20. 5.: ना ’’हर्तुं शक्यते पुनः (पटः); Dr. 8. 50.: दृष्ट्वा ... द्रौपदीम् आहृताम् पुनः. 2) capere, abripere. N. 26. 7.: परस्वम् आहृत्य. 3) accipere, adipisci. N. 24. 29.: प्रतिवाक्ये तथा ’’हृते (nisi separandum तथा हृते); Man. 9. 190.: सगोत्रात् पुत्रम् आहरेत्. 4) क्रतुम् आहर्तुम् offerre, facere sacrificium. Mah. 1. 3764.: त्रीन् अश्वमेधान् आजहार; 3. 9983.: यज्ञान् आजह्रुर् उत्तमान् (v. आहर्तृ). — *Caus.* 1) facere ut quis afferat, apportet, *c. 2. acc.* Mah. 2. 987.: करम् आहारयिष्यामि सर्वान्; Man. 7. 80. 10. 119. 2) adhibere, uti. H. 4. 48.: बलम् आहारयामास यद् वायोर् जगतः क्षये. 3) percipere, sentire, *e. c.* हर्षम् laetitiam, Mah. 3. 867.: सन्त्रासम् terrorem, R. Schl. II. 60. 20.: रोषम् iram, *l. c.* I. 60. 19.

c. आ praef. अभि afferre. Mah. 1. 3733.

c. आ praef. उत् efferre, emittere, proloqui, pronuntiare, dicere, loqui, referre, narrare. Sa. 5. 43.: उदाहृतन् ते वचनम्; Man. 2. 191.: नो ’दाहरेद् अस्य नाम; N. 5. 31.: एतावद् ... यथावृत्तम् उदाहृतम्; Bh. 17. 19. 24. Nominare, appellare. Ur. 63. 9.: वाङ् कामिनो मदनदूतिम् उदाहरन्ति.

c. आ praef. प्रति + उत् respondere. R. Schl. I. 52. 10.: तम् प्रत्युदाहरत्.

c. आ praef. सम् + उत् referre, dicere. Man. 1. 50. R. Schl. I. 14. 23.

c. आ praef. उप facere. Mah. 3. 1353.: यत्नम् उदाहृत्य.

c. आ praef. प्रति 1) recuperare. Mah. 3. 8655.: किमर्थं रामस्य हृतम् आसीद् वपुः प्रभो कथम् प्रत्याहृतञ् चै ’व. 2) efferre, emittere, proloqui, pronuntiare. N. 4. 18.: वाष्पाकुलां वाचम् ... प्रत्याहरन्ती. 3) clamare, vociferari. Dr. 6. 7.: गोमायुः ... प्रत्याहरत्; Mah. 2. 2649.: प्रत्याहरन्ति क्रव्यादा गृध्रगोमायुवायसाः.

c. आ praef. वि 1) pronuntiare, loqui, dicere, narrare. Bh. 8. 13.: ओम् इत्य् एकाक्षरम् ब्रह्म व्याहरन्; N.